शोध-प्रस्ताव

खोरठा लोकगीत: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

पीएच0डी0 उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रारूप
स्नातकोत्तर खोरठा विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

संकाय - जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा

वर्ष - 2025

शोध निर्देशक:

डॉ0 अर्चना कुमारी
सहायक प्राध्यापक
स्नातकोत्तर खोरठा विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी:

दिनेश्वर मुण्डा
यूजीसी नेट/जे0आर0एफ0 उत्तीर्ण
स्नातकोत्तर खोरठा विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोध-प्रस्ताव

प्रस्तावनाः-

झारखण्ड एक बहुप्रजातीय एवं बहुसांस्कृतिक राज्य है। यहाँ तीन प्रजाति के लोग निवास करते हैं। प्रोटो-आस्ट्रेलाइड, द्रविड़ एवं आर्य प्रजाति समानांतर रूप से एक दूसरे के आजू-बाजू हजारों वर्षों से निवास करते आ रहे हैं। इन तीनों प्रजाति की भाषा-संस्कृति ने एक-दूसरे को प्रभावित कर एक सामान्य संस्कृति का निर्माण किया है, जिसे झारखण्डी संस्कृति कहते हैं। आर्य प्रजाति के अंतर्गत आने वाले लोगों को सदान नाम से भी जाना जाता है। सदान वैसे गैर जनजाति समुदाय है जिसका झारखण्ड में होने और रहने का हजारों वर्षों का इतिहास है, जिनका झारखण्ड निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। सदान समुदाय की भाषा को सदानी कहा जाता है। सदानी के चार सदस्य भाषाएँ हैं - खोरठा, कुरमाली, नागपुरी और पंचपरगनिया।

खोरठा का लोक साहित्य एवं शिष्ट साहित्य अस्पृहणीय रूप से समृद्ध है। सम्प्रति खोरठा लोक साहित्य लोकगीतों का अध्ययन हमारा अभीष्ट है। विद्वानों ने लोक साहित्य को सरल, सहज, मानव की सहज अनुभूति को सरल शब्दों में सहज अभिव्यक्ति माना है। लोक साहित्य लोक समाज के हजारों वर्षों के अनुभव की थाती है एवं उनकी सहज विरासत भी है। इसे हम लोक समाज के मानवों की अपनी समय के टकराहट, संघर्ष एवं भिडंत के दस्तावेज भी मान सकते हैं। वाचिक/मौखिक परम्परा में लोक साहित्य, लोक शिक्षण के माध्यम भी रहे हैं। इतना ही नहीं युगों-युगों से लोक समाज के जीवन के उत्स भी है लोक साहित्य। जब-जब मनुष्य जीवन-राह के झंझावतों से झूझ रहा होगा, कठिन प्रश्नों के उत्तर ढूंढ़ रहा होगा, तब-तब लोक साहित्य की शरण में आता रहा होगा, जीवन-राह की थकान को मिटाने के लिए।

लोकगीत लोक साहित्य की एक सर्वाधिक लोकप्रिय एवं प्रमुख विधा है। लोक साहित्य के उपरोक्त सभी विशेषताएँ एवं गुण लोक गीतों में शामिल रहे हैं।

लोकगीतों का संबंध लोकजीवन से है। लोकजीवन के जितने आयाम पक्ष होते हैं। सबमें लोकगीतों की व्याप्ति होती है। खोरठा लोकगीत भी खोरठा भाषी समुदाय के जीवन की हर गतिविधि के साथ जुड़ाव है। साथ ही प्रकृति के साथ भी खोरठा लोकगीतों का गहरा जुड़ाव है।

खोरठा लोक समुदाय के समग्र झारखंडी समुदाय की तरह ही जीवन के विभिन्न संस्कारों पर्व-त्योहारों में गीतों की अनिवार्यता की परंपरा है। बिना गीत के कोई सामाजिक संस्कार और पर्व संपन्न नहीं हो सकते। इसलिए संस्कार संबंधी और पर्व त्योहार के गीतों की संख्या सर्वाधिक पायी जाती है। इसके अतिरिक्त विविध ऋतु आधारित श्रम की महता से जुड़े लोकगीत भी खूब गाये जाते हैं। विशेष अवसर और विषयगत गीतों के अतिरिक्त ऐसे गीतों का भी व्यापक प्रचलन है जो सालों भर कभी भी गाये जा सकते हैं। बच्चों के द्वारा खेलों में गाये जाने वाले गीत भी खोरठा लोकगीत के एक रूप है।

खोरठा लोकगीतों के उक्त समस्त प्रकार के गीतों का विविध आधारों और दृष्टिकोणों से विश्लेषण अभी तक नहीं हो पाया है; जो मेरा इस अध्ययन का अभीष्ट है।

उल्लेखनीय है कि खोरठा लोक गीत समय से असमय या अवसर से वे अवसर नहीं गाये जाने की परम्परा है। हर अवसर के अलग-अलग गीत होते हैं। अतः खास अवसर की गीत को खास अवसर के समय ही गाने की परम्परा रही है। यदि कोई अवसर से बेअवसर गाता है तो उसे पागल या बोडम समझा जाता है। इतना ही नहीं कभी-कभी तो मार खाने की नौबत तक आ जाती है। जैसे कि विवाह गीत, विवाह के अवसर पर ही गाये जाते हैं और सुनने में भी अच्छे लगते हैं। ठीक उसी प्रकार डोहा, झुमटा, चांचइर, रोपनी, निकौनी आदि गीतों का भी अवसर तय है।

प्रेरणा:-

मेरा जन्म विशुद्ध ग्रामीण परिवेश में हुआ है और मेरा सम्पर्क अपने जीवन के शैशव काल से ही खोरठा के लोक गीतों से रहा है। अपने किशोरावस्था से मेरा सम्पर्क इन लोक गीतों एवं नृत्यों से सघन एवं सक्रिय रूप से होने लगा था। जब मैं इन लोक गीतों के सम्पर्क में आया, तब इन गीतों के बोल एवं भावों को समझने का कोशिश किया तो मुझे बड़े ही गुड़भाव के स्पष्ट दर्शन होने लगे और मुझमें इन गीतों के भावों को स्पष्ट रूप से समझने की जिज्ञासा बलवति होने लगी। यह सुखद संयोग है कि जब मैं जनजातीय भाषा विभाग खोरठा में नामांकन कराया तब दबी हुई इच्छा यहाँ की परिवेश में पुनः जागृत होकर गया। स्नातकोत्तर के अध्ययन कार्य के समय नेट और जे0आर0एफ0 की परीक्षा दिसम्बर 2022 में

उत्तीर्ण हुआ और शोध के लिए लोक साहित्य विशेष कर सामान्य लोक गीतों का अध्ययन ही मेरी प्राथमिकता रही। चूँकि खोरठा लोक साहित्य के क्षेत्र में कई शोधार्थियों ने अपना शोध प्रस्तुत किया है, जब मैंने उनका अध्ययन किया तो पाया कि खोरठा के लोकगीतों के समस्त रूपों का अक्षेपित गहन अध्ययन नहीं हुआ है। जो भी हुआ है, वह रैखिक और मात्र एकपक्षीय लोकगीतों का विस्तार लोक जीवन और प्रकृति परिवेश के व्यापक संसार तक है। इसलिए उस पर समग्र अध्ययन की अपेक्षा बनी हुई है। अतः मैंने खोरठा के सभी लोक गीतों के विश्लेषणात्मक अध्ययन को अपने शोध विषय के रूप में चयन किया।

शोध की परिकल्पनाः-

परिकल्पना परि और कल्पना के दो शब्दों के मेल से बना है। परि का तात्पर्य चारों तरफ तथा कल्पना का तात्पर्य अध्ययन और मनन चिन्तन करना से है। इस प्रकार परिकल्पना का साधारण अर्थ पूर्व से कल्पना की जाने वाली अवधारणा अर्थात् अपने विचारों से संबंधित विषय वस्तु पर पहले से ही सोंच निर्धारित करने की प्रक्रिया परिकल्पना कहलाती है।

इस शोध विषय से संबंधित मेरी परिकल्पना है खोरठा क्षेत्र में खोरठा भाषा मंे प्रचलित सभी प्रकार के लोकगीतों के नमून संग्रहीत कर उसके विविध पक्षों का अध्ययन एवं विश्लेषण करना है। निश्चय ही यह एक चुनौती पूर्ण कार्य है। क्यों लोकगीत लोककंठों में मौजूद रहते हैं, उन्हें संकलित करना एक कठिन कार्य है। इसके लिए मेरी परिकल्पित योजना है कि मैं खोरठा के बुजुर्ग लोककलाकारों गीत गाने में दक्ष महिला-पुरूषों से संपर्क कर गीतों का संकलन करूँगा। उनके रागो की जानकारी लूंगा गायन संबंधी आचार संहिताओं को ज्ञात करूँगा, तत्पश्चात् उनका बहुआयामी विश्लेषण का कार्य करूँगा। इस कार्य में शोध निर्देश के साथ संबंधित विषय के विशेषज्ञों का भी सहारा लूँगा।

शोध का उद्देश्यः-

पूर्व में ही कहा गया है कि खोरठा झारखण्ड की सर्वाधिक बड़े क्षेत्र एवं बड़ी जनसंख्या के दैनिक जीवन में प्रयोग की जाने वाली लोकप्रिय भाषा है। वर्तमान में इस भाषा को झारखण्ड में द्वितीय राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। झारखण्ड में प्राथमिक कक्षाओं से लेकर स्नातकोत्तर तक अध्ययन-अध्यापन हो रहा है। इसके

अतिरिक्त झारखण्ड की सभी प्रतियोगी परीक्षाओं में एक अनिवार्य विषय के रूप में शामिल है।

(1) इस शोध का उद्देश्य है कि झारखण्ड के छात्र एवं शिक्षकों को इस विषय से संबंधित अध्ययन सामग्री की आवश्यकता है।

(2) शोध प्रबंध के द्वारा खोरठा लोक गीतों में वर्तमान जन-जीवन की अपने समय के टकराहट, संघर्ष एवं द्वंद्व को अच्छी तरह समझा जा सकता है।

(3) खोरठा लोक गीतों की अच्छाईयाँ राष्ट्र ही नहीं, बल्कि अंतराष्ट्रीय स्तर पर प्रक्षेपित किया जाना है।

(4) लोक गीत, हर्ष विषाद सुख-दुख जैसी भावनाओं को दर्शन कराना।

(5) खोरठा लोक गीतों का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी के स्तंभ के रूप में महत्वपूर्ण सूचना प्रदत्त कराना।

शोध का महत्व:-

(1) इस शोध प्रबंध के प्रकाशित होने से आधुनिक समाज में लोकगीतों के प्रति नयी सृजनशीलता का विकास होगा।

(2) लोक साहित्य में गीतों का अध्ययन से लोक जनमानस में गीतों की सहज अभिव्यक्ति का विकास होगा।

(3) शोध प्रबंध के माध्यम से खोरठा लोकगीतों के प्रति आधुनिक शिक्षित समुदाय में लोकगीतों के प्रति रूझान का विकास होगा।

(4) शोध कार्य से खोरठा के गीतों में व्यंजित सहज-सरल भावों को समझा जा सकेगा।

(5) खोरठा क्षेत्र का लोक समुदाय अपने लोकगीतों की व्याख्या से अपने पुरखा की धरोहर पर गौरवान्वित होगा।

(6) इस शोध कार्य से खोरठा के लोक गीतों के प्रति साकारात्मक और उत्साहवर्धक भाव का संचार होगा।

(7) आधुनिकता के नकारात्मक प्रभाव से ऐसे लोक गीतों को बचाने की दिशा एक अकादमिक पहल होगी।

(8) खोरठा के लोकगीतों में निहित सामाजिक व मानवीय मूल्यों को समझा जा सकेगा और वर्तमान समाज को उससे अवगत कराया जा सकेगा।

शोध विधि:-

- **साक्षात्कार विधि**
- **अवलोकन विधि**
- **वर्णनात्मक विधि**
- **प्रश्नावली विधि**
- **विश्लेषणात्मक विधि**

शोध सामग्री:-

- **कागज-कलम**
- **कैमरा**
- **मोबाईल**
- **कम्प्यूटर**
- **लैपटॉप**
- **इंटरनेट**
- **आधुनिक तकनीकी उपकरण इत्यादि।**

शोध प्रारूप:

खोरठा लोकगीत: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

अध्यायीकरण

प्रथम अध्याय : खोरठा लोक साहित्य एवं लोक गीत की अवधारणा

क) खोरठा लोक गीतों का सामान्य परिचय।

ख) खोरठा लोक गीतों का वर्गीकरण।

द्वितीय अध्याय : खोरठा लोकगीतों में सामाजिक जीवन

क) परिवार एवं उसकी संरचना।

ख) समाज और उसकी संरचना।

ग) सामाजिक रिश्ते हास-परिहास।

घ) धर्म-अध्यात्म।

तृतीय अध्याय: खोरठा लोक गीतों में विविध तत्वों के दर्शन

क) श्रम

ख) समता

ग) सह अस्तित्व

घ) सामूहिकता

ङ) सहयोग

चतुर्थ अध्याय: खोरठा के लोकगीतों में झारखण्डी जनजीवन

क) आर्थिक जीवन

ख) सामाजिक जीवन

ग) सांस्कृतिक जीवन

पंचम् अध्याय: खोरठा लोकगीतों के वर्ण्य-विषय

क) प्रकृति

ख) नारी

ग) जीवन दर्शन

घ) धर्म-अध्यात्म

षष्ठ अध्याय : खोरठा लोकगीतों का काव्यशास्त्रीय विश्लेषण

क) भाव पक्ष

- विविध रस एवं रसांग

ख) कला पक्ष

- छंद विधान
- अलंकार योजना
- बिंब योजना
- प्रतीक योजना आदि

सप्तम् अध्याय : खोरठा लोकगीतों की राग-रागिनियाँ और गायन की आचार संहिता

क) राग-रागिनियों के नाम और स्वरूप

ख) गायन की आचार-संहिता/नियम

अष्टम् अध्याय - खोरठा लोकगीतों मंे आधुनिकता का प्रभाव

क) सकारात्मक प्रभाव

ख) नकारात्मक प्रभाव

शोध निष्कर्ष

परिशिष्ट:

1. आधार ग्रंथों की सूची
2. सहायक ग्रंथों की सूची
3. पत्र-पत्रिकाओं की सूची
4. साक्षात्कार सूची

नोट:- शोध कार्य के दौरान शोध प्रारूप में आवश्यकतानुसार संशोधन किया जा सकता है।

शोध निर्देशक:

डॉ0 अर्चना कुमारी
सहायक प्राध्यापक
स्नातकोत्तर खोरठा विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी:

दिनेश्वर मुण्डा
यूजीसी नेट/जे0आर0एफ0 उत्तीर्ण
स्नातकोत्तर खोरठा विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

आधार-ग्रंथ की सूची

1. ओहदार, डॉ0 बी0एन0, खोरठा भाषा एवं साहित्य, खोरठा भाषा (उद्भव एवं विकास) साहित्य-संस्कृति, रामगढ़, 2007
2. कुमार, प्रो0 (डॉ0) विनोद, सोंधमाटी, जनजातीय भाषा अकादमी, बिहार सरकार, राँची, 1990
3. कुमारी, डॉ0 अर्चना, खोरठा शिष्ट साहित्य: एक अध्ययन, प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन, राँची, 2005
4. कुमारी, डॉ0 शशि, खोरठा लोकगीतों में नारी चित्रण, शोध ग्रंथ, 2024
5. चित्रा, चित्तरंजन महतो, छांहइर, खोरठा भाषा साहित्य संस्कृति अकादमी, रामगढ़, 2007
6. झा, डॉ0 ए0के0, खोरठा काठे-पइदेक खंडी, खोरठा ठाकी क्षेत्र कमिटी कोठार, रामगढ़, 1983
7. झा, डॉ0 ए0के0, खोरठा गइद-पइद संगरह, बोकारो खोरठा कमिटी, बोकारो इस्पात नगर, 1989
8. पानुरी श्री निवास, चाभी-काठी, बालीडीह खोरठा कमिटी, बालीडीह, बोकारो, 2006
9. प्रभाकर डॉ0 गजाधर महतो, खोरठा भाषा साहित्य सफल प्रकाशन, राँची, 2017
10. महतो संतोष कुमार, एक मउनी फुल, रामधन प्रकाशन गांगजोरी, बोकारो, 1988
11. महतो श्याम सुंदर, मुक्तिक डहर, शक्ति ग्राम विकास संघ आजाद सिजुआ भेलाटांड़, धनबाद, 1995
12. 'राज' विश्वनाथ दसौंधी, पुटुस आर परास, बालीडीह खोरठा कमिटी, बोकारो, 2004
13. सुधाकर महेन्द्र नाथ गोस्वामी, जोंक, झारखण्ड झरोखा, राँची, 2015

संदर्भ-ग्रंथ की सूची

1. **ओहदार**, **डॉ**0 **बी**0**एन**0, **खोरठा भाषा एवं साहित्य**, (**उद्भव एवं विकास**), **खोरठा भाषा साहित्य-संस्कृति**, **रामगढ़**, 2007
2. **कुमार**, **प्रो**0 (**डॉ**0) **विनोद**, **सोंधमाटी**, **जनजातीय भाषा अकादमी**, **बिहार सरकार**, **राँची**, 1990
3. **कुमारी**, **डॉ**0 **अर्चना**, **खोरठा शिष्ट कथा साहित्य एक अध्ययन**, **प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन**, **राँची**, 2005
4. **कुमारी**, **डॉ**0 **शशि**, **खोरठा लोकगीतों में नारी चित्रण**, **शोध ग्रंथ**, 2024
5. **चित्रा**, **चित्तरंजन महतो**, **छांहइर**, **खोरठा भाषा साहित्य संस्कृति अकादमी**, **रामगढ़**, 2007
6. **झा**, **डॉ**0 **ए**0**के**0, **खोरठा**, **काठे पइदेक खंडी**, **खोरठा ढाकी क्षेत्र कमिटी**, **कोठार रामगढ़**, 1983
7. **झा**, **डॉ**0 **ए**0**के**0, **खोरठा गइद पईद संगरह**, **बोकारो**, **खोरठा कमिटी**, **बोकारो इस्पात नगर**, 1989
8. **पानुरी**, **श्रीनिवास**, **चाभी काठी**, **बालीडीह खोरठा कमिटी**, **बालीडीह**, **बोकारो**, 2006
9. **प्रभाकर डॉ**0 **गजाधर महतो**, **खोरठा भाषा साहित्य सफल प्रकाशन**, **राँची**, 2017
10. **बंशी**, **लाल बंशी**, **डीडांक डोआनी**, **चास**, **बोकारो**, 1992
11. **महतो**, **संतोष कुमार**, **एक मउनी फूल**, **रामधन प्रकाशन**, **गांगजोरी**, **बोकारो**, 1988

पत्र-पत्रिकाओं की सूची

1. **लुआठी**, **आकाश खूँटी**, **गिरिधारी गोस्वामी**, **बालीडीह**, **बोकारो**, 1999
2. **करील**, **डॉ**0 **बी**0**एन**0 **ओहदार**, **ओरमांझी**, **राँची**, 2009
3. **सहिदान**, **फाल्गुनी मरीक कुशवाहा**, **गिरीडीह**, 2002
4. **तितकी**, **डॉ**0 **ए**0**के**0 **झा**, **ढांकी क्षेत्र खोरठा कमिटी**, **रामगढ़**
5. **परास फुल**, **महेन्द्र प्रबुद्ध**, **धनबाद**, 2009
6. **सहिया**, **अनिल कुमार विस्थापित**, **बोकारो**, 2002